



विद्यालय पत्रिका(2024-25)

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नादौन

-----स्थापना 1996-----



उड़ान



संपादक - मंडल



मुख्य संरक्षक :

श्री वरुण मित्र(उपायुक्त, गुरुग्राम संभाग)

संरक्षक :

श्री अजीत कुमार(भा. प्र. से., अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति)

श्री भूपेश भट्ट (सहायक आयुक्त,गुरुग्राम संभाग)

प्राचार्य:

श्री एस. डी.लखनपाल

संपादक:

-श्रीमती आरती (स्नातकोत्तर हिंदी शिक्षिका)

-श्रीमती रेखा (स्नातकोत्तर अंग्रेजी शिक्षिका)

-डॉ. सुनील कुमार झा (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक संस्कृत)

विद्यार्थी संपादक :

-साक्षी (हिंदी अनुभाग)

-काव्या (अंग्रेजी अनुभाग)

-दक्ष सरोच (संस्कृत अनुभाग)

सन्देश



उपायुक्त

के.वि.सं. ,गुरुग्राम संभाग

अत्यंत हर्ष का विषय है कि पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नादौन शैक्षणिक सत्र 2024-25 हेतु अपनी विद्यालय- पत्रिका 'उड़ान' प्रकाशित करने जा रहा है।

विद्यालय पत्रिका एक ऐसा महत्वपूर्ण पटल है जो नवोदित लेखकों को अपनी सृजनात्मक क्षमता की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करता है। मैं आश्चस्त हूँ कि शिक्षकगण छात्रों को 21वीं सदी के नए युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए विद्यालय की सभी गतिविधियों में उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास करते रहेंगे। मुझे विश्वास है कि यह विद्यालय पत्रिका छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा तथा विद्यालय की गतिविधियों एवं उपलब्धियों को व्यक्त करने का एक अत्यंत प्रभावी मंच प्रदान करेगी। साथ ही यह प्रकाशन ई-पत्रिका के रूप में वर्षवार विद्यालय की वेबसाइट पर भी पाठकों के लिए उपलब्ध हो ताकि अधिक से अधिक लोगों तक इसकी पहुँच हो। मैं पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय के प्राचार्य और शिक्षकों को विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

(वरुण मित्र)

उपायुक्त

के.वि.सं. ,गुरुग्राम संभाग

अध्यक्ष का संदेश



भा.प्र.से.

अध्यक्ष, विद्यालय प्रबंधन समिति

अत्यंत हर्ष का विषय है कि पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नादौन शैक्षणिक सत्र 2024-25 का प्रकाशन करने जा रहा है। मैं, विद्यालय के प्राचार्य/अध्यापकों एवं सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

विद्यालय पत्रिका केवल विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभाओं को ही नहीं दर्शाती है बल्कि उनके द्वारा प्रकाशित हुए क्रियाकलापों को देखते हुए मन में गौरवान्वित होने की भावना पैदा कर उनके व्यक्तित्व को निखारने में भी मदद करती है। अच्छी शिक्षा के अतिरिक्त विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता एवं भारतीयता को प्रेरित व प्रोत्साहित करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन का एक प्रमुख उद्देश्य है। मैं आशा करता हूँ कि विद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने अपने मन की भावनाओं को कविता, कहानी लेख के सहारे सहज भाव से इस पत्रिका के माध्यम से व्यक्त किया है। मैं ये भी आशा करता हूँ कि विद्यालय- पत्रिका विद्यालय की प्रगति और कार्य निष्पादन पर भी प्रकाश डालेगी।

मैं पुनः इस पत्रिका सृजन से जुड़े सभी सदस्यों, विद्यार्थियों और सुधी पाठकों को यह पत्रिका तैयार करने में उनके सृजनात्मक प्रयासों के लिए इस आशा के साथ बधाई देता हूँ कि यह पत्रिका अत्यंत ही रोचक एवं उपयोगी सिद्ध होगी तथा अपने उद्देश्यों को प्राप्त करेगी। मैं पूरी तरह आश्वस्त हूँ कि आपकी पत्रिका श्रेष्ठता को लगातार प्रदर्शित करती रहेगी।

असीम शुभकामनाओं सहित.....।

अमरजीत सिंह

भा.प्र.से., अध्यक्ष, विद्यालय प्रबंधन समिति

संदेश



सहायक आयुक्त,
के. वि. सं., गुरुग्राम संभाग

मुझे यह जानकर बहुत खुशी है कि पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय केन्द्रीय विद्यालय नादौन, सत्र 2024-25 के लिए विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है।

मेरा मानना है कि प्रत्येक बच्चे में सृजनात्मक क्षमता होती है। पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा बच्चे वैज्ञानिक, साहित्यिक एवं कला के क्षेत्र में अपनी रचनात्मकता को उत्कृष्ट ढंग से प्रदर्शित कर सकते हैं। मेरा विश्वास है कि पत्रिका न केवल इस शानदार संस्था की प्रगति के क्षेत्र में मील का पत्थर बनेगी, यह एक वास्तविक और सच्चे शिक्षा संस्थान की अभिव्यक्ति का मुखपत्र भी साबित होगी।

मैं विद्यालय की ख्याति को बनाए रखने के प्रयासों के लिए पूरे शैक्षिक और प्रशासनिक स्टाफ का अभिनंदन करता हूँ और सभी छात्रों और स्टाफ को विद्यालय पत्रिका के इस संस्करण के प्रकाशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

(भूपेश भट्ट)

सहायक आयुक्त, के. वि. सं., गुरुग्राम संभाग

प्राचार्य का संदेश

प्राचार्य की कलम से.....

लहरों से डर कर नौका कभी पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती.....



एस डी लखनपाल
(प्राचार्य)

प्रिय विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं आदरणीय अध्यापकगण,
मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि हमारे विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'उड़ान' का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा का दर्पण है, बल्कि विद्यालय की शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सह-शैक्षणिक उपलब्धियों का जीवंत दस्तावेज भी है।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को 21 वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाना है, उनमें कठिन परिश्रम, आत्मविश्वास, संवेदनशीलता, अनुशासन सरीखे जीवन मूल्यों के साथ तार्किक चिंतन एवं सृजनशीलता का विकास करना भी है। मुझे गर्व है कि हमारे शिक्षक अपनी निष्ठा और समर्पण के साथ इन मूल्यों को छात्रों में स्थापित कर रहे हैं।
मैं अपने सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करता हूँ कि वे अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखें, निरंतर सीखते रहें और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने का प्रयास करें।
इस पत्रिका के निर्माण से जुड़े सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और संपादकीय दल का मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।
आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

एस डी लखनपाल
(प्राचार्य)

संपादक की कलम से.....

तू खुद की खोज में निकल,
तू किस लिए हताश है,
तू चल तेरे वजूद की,
समय को भी तलाश है।

..... डॉ.हरिवंश राय बच्चन



सुधी पाठको!

प्रतिभा परिचय की मोहताज नहीं होती.....जिसमें प्रतिभा होती है वह छिपी भी नहीं रहती ।

शैक्षणिक सत्र 2024 -25 की विद्यालय पत्रिका आपके हाथों में सौंपते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है । यह पत्रिका प्रमाण है पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नादौन के विद्यार्थियों की अंतर्निहित प्रतिभा का, जो शैक्षणिक, खेलकूद, स्काउट एंड गाइड, रचनात्मक अधिगम गतिविधियों में उनकी सहभागिता एवं साहित्यिक लेखन के रूप में इस पत्रिका में मुखरित हुई है । यह पत्रिका दर्पण है केंद्रीय विद्यालय संगठन के दिशा निर्देशों के अनुपालन एवं पीएम श्री योजना के क्रियान्वयन का तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विनिर्दिष्ट विशेष कौशलों के विकास का । पत्रिका 'उड़ान' है हमारे विद्यालय के नवोदित साहित्यकारों के मन की भावनाओं और विचारों की । इस पत्रिका में हमारे विद्यार्थियों की 20 स्वरचित रचनाओं के साथ विभिन्न ज्ञानवर्धक लेखों का समावेश किया गया है जिन्हें पढ़कर आपको साहित्यिक रस की अनुभूति होगी ।

मैं, विद्यालय पत्रिका सृजन के विशेष मार्गदर्शक माननीय प्राचार्य श्री एस डी लखनपाल जी की हृदय से आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा से मुझे इस विद्यालय पत्रिका को साकार रूप देने का अवसर प्राप्त हुआ । मैं हृदय से धन्यवाद करती हूँ संपादक मंडल के सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थी-संपादक मंडल का जिनके अथक एवं सृजनात्मक प्रयासों से पत्रिका को वर्तमान रूपाकार प्राप्त हुआ । अंततः आभारी हूँ उन बाल पत्रकारों और शिक्षकों की जिन्होंने अपनी भावनाओं और विचारों को लेखों के माध्यम से उड़ान प्रदान की फलस्वरूप पत्रिका अस्तित्व में आई । ईश्वर करे ये प्रतिभाएँ निरंतर स्वयं से परिचय करते हुए सदैव आत्मविकास करती रहें और समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनाएँ ।

असीम शुभकामनाओं एवं कृतज्ञता सहित...

आरती

स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिन्दी)

मुख्य संपादक

के.वि. नादौन के सितारे



पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नादौन
तह. नादौन जिला हमीरपुर (हि.प्र.) 177033



Shining Stars Session-2024-25



Ishika Thakur
92%



Kavya
90.2%



Pragya
86.4%



Sparsh Rana
85.4%



Parth Sharma
83.4%



Sakshi
82.2%



Shourya Panwar
78.4%



Aditya Rana
76.4%



Anurag Singh
76%



Avani Bhatia
75.4%

नव निर्मित भवन में प्रवेश



वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह

वार्षिक उत्सवके अवसर पर उपमंडल दंड अधिकारी माननीय श्री राकेश शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में



अलंकरण समारोह



अन्तराष्ट्रीय योग दिवस



बैग लेस डे



हरित विद्यालय गतिविधियाँ

विद्यार्थियों द्वारा एक एक पौधा दान किया गया



वार्षिक निरीक्षण





शिक्षक दिवस



हिंदी पखवाड़ा



शैक्षणिक भ्रमण

प्राथमिक विभाग- काँगड़ा फोर्ट , माध्यमिक विभाग हेतु पालमपुर विज्ञान केंद्र भ्रमण का आयोजन



गाइड शिविर

.....तृतीय सोपान परीक्षण शिविर.....



आत्मरक्षा शिविर आयोजन



प्रयोगशाला गतिविधियां

भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला में प्रयोग करते विद्यार्थी



वन महोत्सव



इको क्लब

(एक पेड़ माँ के नाम)



वार्षिक खेलकूद दिवस

2024-25



गणतंत्र दिवस



स्वरचित कविताएं

1. "मंजिल से बड़ी मेरी उड़ान है"

कभी सोचा है?
नदी अगर सिर्फ समुद्र तक पहुंचना
ही अपना ध्येय मान ले,
तो उसके सफर के कितने दृश्य,
कितनी हरी-भरी जमीनें, कितने प्यासे होंठ-
सब अधूरे रह जाएँ।
नदी की कहानी सिर्फ सागर नहीं,
उसकी राह के हर मोड़ में लिखी होती है।
क्योंकि बहाव ही उसका सच है,
और सच जब रुकता है तो बस ठहराव रह जाता है।
इसीलिए
मंजिल से बड़ी मेरी उड़ान है।
अगर पंछी बस डाल तक ही उड़ता,
तो आसमान की नीली छटा कौन देखता?
अगर आग सिर्फ राख बनने की जल्दी करती,
तो उसकी गर्माहट, उसका उजाला
किसे मिल पाता?
अगर बादल बस बरसने की हड़बड़ी करते,
तो उनकी बदलती आकृतियाँ,
उनकी धीमी चाल
किसे भाती?
जीवन की हर चीज़ में यही नियम है-
गति है तो रस है,
गति है तो अर्थ है।
मंजिल तो आखिरी बिंदु है,
पर उड़ान...
हर उस संभावना का नाम है
जहाँ अभी जाना बाकी है।

लोग कहते हैं- 'पहुँचना ही सफलता है.'
पर सोचो ज़रा...
जो शिखर छूकर भी भीतर खाली रह जाए,
क्या उसे सचमुच जीत कहते हैं?

कभी-कभी ठहराव ताज बनकर बोझ लगता है,
और सफ़र की थकान याद बनकर सौंदर्य।
यादें ही असल में विजय-पत्र हैं,
और सफ़र ही जीवन का हस्ताक्षर।

इसलिए.....
मैं कहती हूँ.....
सपनों को सिर्फ मंजिल से मत तौलो।
क्योंकि मंजिलें अक्सर दीवार बनाती हैं,
और उड़ानें हमेशा खिड़की खोल जाती हैं।
सच तो यह है-मंजिल की स्थिरता सिर झुकवाती हैं।
उड़ानें गर्दन उठावाती हैं।
मंजिलें बिंदु हैं,
उड़ानें अनंत हैं।

वैसे साँस जब तक आती-जाती रहती है,
जीवन की लौ जगमगाती है।
पर जिस दिन रुककर ठहर जाती है,
कहानी वहीं अधूरी रह जाती है।
साँस चलती है तो सपना जगता है,
सपना जगता है तो सफर सजता है।
सफर वही राग है, वहीं गान है,
जिस पर थिरकता हर इंसान है।

और जब तक सांसों में अनंत का स्वाद है,
जब तक आँखों में अगला क्षितिज चमकता है-
तब तक.....

मेरे लिए सफर ही जश्न है,
मेरे लिए कोशिश ही जीत है।

क्योंकि.....
मंजिल से बड़ी
हमेशा मेरी उड़ान है।

- कृतिका शर्मा , बारहवीं ब

2. मेरे साथी : मेरे गुरु

गुरु हमारे वो साथी हैं.. जो हर बाधा को हटाते हैं। समय-समय पर ज्ञान देते, अज्ञान से हमें जगाते हैं। गुरु हमारे वो साथी हैं, जो हर चिंता को दूर करते हैं। गुरु हमारे वो साथी हैं, जो हर विपदा को हरते हैं। गुरु हमारे वो साथी हैं, जो पथ - प्रदर्शक बनकर प्रकाश फैलाते हैं। हमें अंधकार से उज्ज्वलता की ओर ले जाते हैं।	गुरु हमारे वो साथी हैं, जो सन्निकट रहकर जीवन-यापन सिखाते हैं हर कठिनाई को सरल बनाते, और जीवन को सत्य मार्ग पर चलाते हैं। गुरु हमारे वो साथी हैं, जिनकी वाणी अमृत समान है। जो जीवन को संवारते, ज्ञान की गंगा बहाते, और हर शिष्य को पार लगाते हैं। -प्रांजिल शर्मा ,कक्षा - 12 वीं 'ब'
--	--

3. दीदीप , एकरोशनी

एक ही रात थी, पर दो जहाँ थे, एक के घर दीए थे, एक के घर धुआँ था। कहीं हँसी की गूँज थी, कहीं सन्नाटा छाया, कहीं पटाखे फूटे, कहीं दिल ही फट गया। अमीर के घर रंगोली में मोती जड़े थे, महँगे कपड़ों में बच्चे सजे थे, सोने की थाल में मिठाइयाँ रखी थीं, हँसी थी, रोशनी थी, ख्वाहिशें पक्की थीं। और उधर... गरीब का बच्चा कोने में बैठा था, फटे कुर्ते में ठंडी हवा से लड़ता था, दीया जलाना चाहता था, पर तेल कहाँ था? माँ ने बस आँचल से आँसू पोंछा था। किसी ने कहा - "दीवाली है खुशियों की", पर किसकी खुशियाँ? किसकी कहानी ? एक ओर दीपक से महल चमके, दूजी ओर अंधेरे में भूख तड़पे।	अमीर ने कहा- "भगवान ने दिया बहुत", गरीब बोला - "शायद भूल गया कुछ"। पर दोनों ने दीया जलाया उस रात, एक ने सोने के दिए में, एक टूटे हुए हाथ में बाता। फर्क बस इतना था इस दीवाली में, किसी के लिए त्यौहार था, किसी के लिए सवाल था- क्या रोशनी सिर्फ अमीरों का हक है? क्या अंधेरा गरीब की तकदीर का नक्श है? पर फिर भी - वो छोटा बच्चा मुस्कराया, फटे दिए से भी उजाला फैलाया, कहा - "दीवाली दिल की होती है, घर की नहीं, रोशनी इरादों की होती है, अमीरी की नहीं।" -निशा, बारहवीं ब
---	--

4.काश...

(एक बच्ची की आकांक्षा)

काश... मुझे लोगों की उम्मीदों ने जकड़ा ना होता, काश... किसी दूसरे के घर को संवार के यूँ रखना ना होता। वैसे तो सब पूजते हैं, लक्ष्मी जी को, पर काश,हर घर की लक्ष्मी का एक खुद का घर भी होता। काश! काश,दूसरों को खुश रखना एक बोझ सा ना होता, फिर शायद ही किसी की नाराजगी का यह आलम रोज होता। माना बेटा नहीं हूँ, फिर भी काश मुझे यूँ पराया धन ना माना जाता। हर वक्त सिर्फ ख्याल रहता है जहन में दूसरों का काश बचपन से ही यह शर्म-ओ-हया का पाठ पढ़ाया ना होता। माना बेटों को भी है जिम्मेदारियां घर की, पर काश उनके जैसे अरमान पूरे करने की हिम्मत हमें भी मिली होती। काश घर की इज्जत सिर्फ बेटी या बहू से नहीं, घर के बेटों से भी होती, काश गलती करने पर सिर्फ बेटों को नहीं हमें भी माफी मिली होती। काश माँ बाप को होती ना फिक्र इन दुनिया वालों की तो शायद बेटियां भी	बेफिक्र होकर जी पातीं। काश किसी और के लिए हमें अपना नाम और काम बदलना ना पड़ता. यूँ ही किसी के लिए घर छोड़ना ना पड़ता। काश हमें शादी के बंधन में बंधने का बंधन ना होता। काश हमें भी बेटों के जैसे अच्छी नौकरी का वरदान बड़ों से मिला होता। काश किसी बेटी के साथ गलत होने पर खामोश ना करवाया जाता समाज ऐसा ही है कहकर चुप न कराया होता। काश बेटियों को गोल रोटी बनने पर नहीं कामयाब होने पर शाबासी दी जाती। काश बेटों की तरह ही अपनी कमाई अपने पिता की दे पाते। काश काश यह काश बन पाता हकीकत कभी। काश एक बेटी भी घर का बेटा बन पाती कभी। काश लड़कों की तरह विरासत में दौलत ना सही बस एक आजादी ही मिली होती। -मन्नत ,बारहवी अ
--	---

5 .हिंदी भाषा

हिंदी है भारत की शान, हर दिल दिल की है पहचान। माँ की ममता जैसी प्यारी, हिंदी भाषा है सबसे न्यारी। जिसने काल को जीत लिया है ऐसी यह भाषा है हिंदी सरल शब्दों में कहा जाए तो. जीवन की परिभाषा है हिंदी।	जन-जन की भाषा है हिंदी, हम सबकी आशा है हिंदी। सादगी का इसमें है वास, बसा इसमें है पूरा इतिहास । हम सबको इसे अपनाना है हिंदी का मान बढ़ाना है। हिंदी से है देश महान हिंदी है भारत की शान।" -मृदुल रत्न ,कक्षा7
--	---

6. धर्म का आतंक

कांप उठी है, आज ये धड़कन, क्यों रो रहा है मेरा ये मन खौफ से भर गया है आज ये हिंदुस्तान का मौसम । चल पड़े फौजी फिर अपने देश, क्योंकि छा रहा देश में फिर आतंकवाद का वेस मारे कितने एक ज्वाला के समान पर अब बनेगा पाकिस्तान जलती लंका के समान । कुछ ही वक्त पहले किसी की शादी हुई खुशी से हाथ पीले हो गए, अपनों के सामने ही कश्मीर में लहू से इंसान गीले हो गए	रोने की गूंज तो पूरे विश्व ने सुनी किसी का भाई तो किसी का बाप मारा गया आतंक भी , धर्म देख कर हुआ वो सात जन्म का साथ भी वहीं मारा गया। मन्दिर मस्जिद वैर कराते मेल कराता भाई-चारा क्यों बनाते देशों को वीरान यदि बंधे होते सिर्फ एक के जिसने बनाया है जग सारा -रोहन राणा , बारहवी ब
--	--

7. राजभाषा हिन्दी

माँ के शीश की बिंदी, मेरी प्यारी भाषा हिन्दी। मातृभूमि की शान यही है, भाषाओं की जान यहीं है हिंदी से पहचान हमारी, भाषाओं में सबसे न्यारी। अखिल विश्व में अखिल शान से, व्यापक है हिन्दी पहचान से।।	राज भाषा बन अग्रिम पंक्ति पर, पूर्ण जोश से चल रहा हिंदी का सफर। लक्ष्य है अपने मुकाम को पाना , हिंदी में पढ़ना और पढ़ाना।। अन्य भाषाओं का ज्ञान होना भी जरूरी है, निज भाषा से कभी रखनी नहीं दूरी है। आओ मिलकर करें सब सतत प्रयास, और राजभाषा को ना बनने दें एक इतिहास।। -भाविकापोखरियाल , कक्षा = आठवी
---	---

8. मैं क्यों लिखने से डरता हूँ?

सफेद कागज और स्याही का रंग,
एक अजीब सी चल रही है मन में विचारों की जंग
कमरे में शांति, खिड़की खुली है
पर कलम मेरी नजाने क्यों, रुकी है?
मन में सागर है शब्दों का,
पर कागज सूखा रह जाता है,
मुझ को हर पल एक डर सताता है।

क्या सोचेंगे लोग, क्या कहेगा जमाना ?
कहीं कोई गलती न हो जाए या कोई न
पहचाना?
यह आलोचना का भूत बड़ा जालिम है
जो हर रचना की शुरुआत से पहले हाजिर है।
लिखने से पहले ही झुंझला जाता हूँ
हर विचार को काटने को तैयार हो जाता हूँ।
पहली पंक्ति ही दुश्मन है, कहीं गलत न हो जाए,
इसलिए हम आज तक नहीं लिख पाए।

सफेद कागज एक आईना है,
जिसमें मुझे अपना डर दिखता है
पर अगर मैं ना लिखूँ तो मुझे वही डरा
हुआ कल दिखता है।
पर आज फैसला है, यह दीवार तोड़नी है,
यह खामोशी की जंजीर अब छोड़नी है।
कौन कहता है कि हर लफ्ज़ को बड़ा होना चाहिए?

कभी-कभी छोटा सा शब्द भी गहरा होना चाहिए।
आज इस डर को ही अपनी कहानी बनाऊँगा,
और इस खाली पन्ने को भरकर दिखाऊँगा।
जमाने का भय तो मन की क्षणिक दुर्बलता का आवरण है,
सृजन ही मेरी चेतना का अंतिम संवर्धन है।

-शैलेश ,ग्यारहवीं ब

9. सादगी की सुंदरता

सादगी का अर्थ है -

सादगी का अर्थ है आडंबर, दिखावे और फिजूलखर्ची से दूर रहकर सरल, सहज व सादा जीवन जीना। यह केवल पहनावे तक सीमित नहीं, बल्कि विचारों, व्यवहार और जीवनशैली की सरलता है। सादगीपूर्ण जीवन में अपनी आवश्यकताओं को कम रखना और आंतरिक संतोष (inner satisfaction) को प्राथमिकता देना शामिल है। यह मानसिक शांति, तनावमुक्ति और आत्म-संतुष्टि प्रदान करती है। महात्मा गांधी ने सादगी को जीवन के एक उच्च मूल्य के रूप में अपनाया था। यह दिखावे की चकाचौंध से ऊपर उठकर, ईमानदारी और सरलता से जीवन जीने की एक कला है, जो मनुष्य को एक अर्थपूर्ण, शांत और तनावमुक्त जीवन जीने की ओर ले जाती है।

मुख्य बिंदु:

- दिखावा-मुक्त जीवन: आडंबरहीन और सहज।
- संतोष: कम संसाधनों में खुशी खोजना।
- मानसिक शांति: अनावश्यक इच्छाओं से मुक्ति।
- सरल व्यवहार: स्पष्टता और सादापन।

-शिवांगी ,ग्यारहवीं ब

10. मेरी लिखाई '

“मुझे हमेशा से लिखने का शौक रहा है — कहानियाँ, कविताएँ और गीत। शब्दों का विशाल सागर भले ही मेरे पास न हो, पर जो भी लिखता हूँ, दिल से लिखता हूँ। कई बार लगता है कि शब्द कम पड़ जाते हैं पर भावनाएँ कभी कम नहीं होतीं। लिखने की इसी यात्रा ने मुझे समझाया है कि इंसान को बस शुरुआत करनी होती है, उसके बाद रास्ते खुद-ही बनते चले जाते हैं। धीरे-धीरे मैंने समझा कि कला किसी को साबित करने का नाम नहीं, बल्कि खुद को पहचानने का तरीका है। लिखते-लिखते मैंने जाना कि हर पंक्ति, हर भावना, हर कहानी — अपने अंदर एक छोटा सा सच छुपाए होती है। कभी ये सच हमें मजबूत बनाता है, कभी रोने पर मजबूर करता है, और कभी वह सच हमें दोबारा खड़े होने की हिम्मत देता है। मैंने यह भी सीखा कि अच्छे लेखक वे नहीं होते जिनके पास कठिन शब्द हों, बल्कि वे होते हैं जो साधारण शब्दों में गहरी बातें कह पाते हैं। अब लिखना सिर्फ मेरा शौक नहीं रहा---

ये मेरी आवाज़, मेरी पहचान और मेरे सपनों की दिशा बन चुका है। और शायद एक दिन, मेरे लिखे हुए शब्द किसी और की हिम्मत बन जाएँ—वैसे ही जैसे आज ये मेरे लिए बनते जा रहे हैं।

एक शायरी जो मने खुद लिखी है जो की शहीद वीर जवान पर निर्धारित है -:

उन वीरों से पूछो, क्या-क्या उन्होंने खोया है,
एक मिट्टी की खातिर कितना दर्द वो रोया है।
माँ, पिता, पत्नी—सभी के सपने टूट जाते हैं,
पर मंत्री तो बस दो शब्द कहकर लौट जाते हैं।

कौन जाने वीर के जाने पर कितने दिल रोते हैं...
कितनी रातों घरों में खामोशी से सोते हैं।

-दक्ष सरोच ,ग्यारहवी 'ब'

11. जिंदगी का मजेदार स्कूल

जिंदगी भी क्या अजीब स्कूल है, यहाँ हर कोई स्टूडेंट, पर कोई फूल नहीं है। क्लास रूम तो बड़ा है, मगर टीचर कोई नहीं, कभी धूप पड़ती है, कभी बारिश रुकती ही नहीं। सुबह - सुबह उठना – सबसे मुश्किल चैप्टर, नींद और अलार्म की चलती रहती फाइट कैक्टर। मम्मी कहती हैं - "उठ जा बेटा, वरना लेट हो जाएगी" पर आँख कहती है - "थोड़ा और सो ले, सपना प्यारा है भाई।" होमवर्क जिंदगी भी देती है रोज़, कभी टेस्ट बिना बताए लेती है बेमौज। गलती करो तो मिलती है डॉट की कॉपी, और कभी - कभी प्रशंसा की टॉफी भी, जब सीख लो सच्ची नौटी। कभी दोस्त बनते हैं, कभी झगड़े होते हैं, कभी रिपोर्ट कार्ड में लाल निशान रोते हैं। पर इन सब से सीख मिलती है यही कि जीवन में गिर कर भी उठना सही।	टीचर कहती है - "सच्चाई पे चलो, शॉर्टकट मत लो"। जिंदगी भी कहती है - "ट्रैफिक में ओवरटेक मत करो!" हर एक जीत, हर गलती एक लेसन है, हर हार एक जीत अगर हँसते हुए सीखो – तो जिंदगी बने गीता। तो दोस्तों, इस स्कूल का यही है रूल, हँसो, सीखो और बनो कूल। क्योंकि जिंदगी का असली टॉपर वही, यही असली शुभ जो गिर कर भी मुस्कुराए – यही असली खुशी, सुख दुख हँस कर गले लगाए। -एंजेल शर्मा ,ग्यारहवी 'ब'
---	--

12. प्रेम का असली मतलब

प्रेम लोग अक्सर सोचते हैं कि
प्रेम का मतलब सिर्फ एक रिश्ता होता है,
असली सच्चाई इससे कहीं गहरी है।
प्रेम उन सब से पवित्र भावनाओं में से एक है जिसे हम
महसूस कर सकते हैं।

प्रेम सिर्फ एक व्यक्ति
या एक रिश्ते तक सीमित नहीं होता,
यह हर छोटे से
छोटे एहसास, देखभाल और जुड़ाव में छिपा होता है।

हम प्रेम महसूस करते हैं
जब हमारे माता - पिता
हमारे खाने की मेज पर इंतज़ार करते,
जब हमारे दोस्त हमें हँसाते हैं
या जब हम एक लंबे दिन के बाद
अपनी पसंदीदा आइसक्रीम खाते हैं।

प्रेम तब भी होता है
जब कोई हमें ध्यान से सुनता है,
हमारी मदद करता है,
या बस बिना कुछ कहे हमारे साथ रहता है।

प्रेम प्रकृति में भी मौजूद है —
जैसे फूलों का सूरज की ओर खिलना
और आसमान का बारिश के ज़रिए
धरती को गले लगा लेना।

प्रेम हमें दया, धैर्य
और कृतज्ञता सिखाता है।
यह याद दिलाता है कि
सच्ची खुशी तब बढ़ती है
जब हम देते हैं,
सिर्फ पाते नहीं।

सच्चा प्रेम परिपूर्णता
के बारे में नहीं होता,
बल्कि उस एहसास के बारे में होता है,
जब हम अपने आप को
समझा हुआ,
महत्व दिया हुआ
और जुड़ा हुआ महसूस करते हैं —
लोगों से, ज़िंदगी से और खुद से।

इसलिए अगर कभी भी
अकेलापन महसूस हो,
तो याद रखना —
प्रेम कहीं दूर नहीं है।
यह तुम्हारी आसपास ही है।

ज़िंदगी के हर छोटे से कोने में।
उसकी पहचान करो
और प्रेम का प्रसार करो।

-परी चौधरी ग्यारहवीं 'ब'

13. हिन्दी है शान

हिन्दी है अपनी पहचान, भारत माँ का यह अभिमान। गंगा से निर्मल इसकी धारा, सुगंध से महकता संसार सारा। कितनी सरल, कितनी सुहानी, जन - जन की यह जुबानी। हर दिन दिल में बसी इसकी मिठास, हिन्दी का नहीं कोई विशेष विकल्प खासा। कबीर की साखी, मीरा के गीत, तुलसी के दोहे, सूर के गीता। हिन्दी ने गाया प्रेम का गान, सहेजे भारत की हर जान। संविधान ने दिया इसे मान, बना राजभाषा, बढ़ाया इसका सम्मान। महत्व इसका केवल किताबों में नहीं, धड़कन यह हमारी संस्कृति से सही।	उत्पत्ति इसकी देव भाषा संस्कृत से, आज करती सब के दिलों पर राज यह। गूगल भी बोले हिन्दी आज, दुनिया में बढ़ा इसका रिवाज। भाषा नहीं यह भावों का सागर, इससे ही जगत संस्कृति को आधार। जो नहीं समझे हिन्दी का मान, वो कैसे जाने भारत की शान। आओ सब मिलकर प्रण यह करें, हिन्दी का मान कभी न घटे। घर - घर में हिन्दी का दीप जलाएँ, विश्व में इसका मान बढ़ाएँ। हिन्दी है जीवन, हिन्दी है शान, हिन्दी से रोशन हो हिंदुस्तान। जब तक गंगा में जल बहेगा, हिन्दी का दीप यूँ ही जलेगा। -राइदा शर्मा ,ग्याहरवी
---	---

14. परीक्षा

Paper की रोटी, Pen का पराठा, Notes का अचार, Book की चटनी, Question की बहार, Teacher की दुश्मनी, Doston का प्यार, मुबारक हो आप सभी को —	नहीं पढ़ेंगे तो फेल होंगे, फेल होंगे तो सबसे पीछे रहोंगे, रहोंगे तो बेइज्जती होगी, बेइज्जती होगी तो लोग बातें बनाएँगे। इसलिए दिन - रात एक करो, एक और महत्वपूर्ण बात। परीक्षा चाहे जैसी भी हो,
---	--

ये है Exam का त्योहार। आई परीक्षा, निकला दम, खेलना और कूदना हो गया है बंद। जब देखो दिन भर किताबें खोल कर बैठे हैं हम, इन परीक्षाओं ने कर दिया है हमारी नाक में दम। पर क्या करें, पढ़ना तो पड़ेगा।	एक हौसला जुटाना होता है। दूसरों के विचारों को हटाकर अपने विचारों को रखना होता है। अक्सर लोग मेहनत को चंद मिनटों में मिटा देते हैं। समझदार परीक्षा देने वाले वही होते हैं जो अपनी मेहनत से जवाब देते हैं। इसलिए कहते हैं परीक्षा को हमेशा ईमानदारी से देना चाहिए। -नैना ,आठवी
---	---

15. मुरली के स्वर

नीले गगन के तले खड़ा, मधुर मुस्कान लिए, गोपाल। हाथ में मुरली, आँखों में शांति, हर सुर में बस प्रेम का जाल। मैदानों में गूँजे नाम तेरा, यमुना किनारे रास रचाए। धूल भरे पग भी पावन लगे, जहाँ तू कदम बढ़ाए। गीता का तेरा वो उपदेश, अब भी मन को राह दिखाए — “कर्म कर, फल की चिंता मत कर”, हर युग में यही सिखाए।	राधा का भाव, अर्जुन की आस, सब में तेरा ही रूप बसाए। माया में जो खो जाए मन, तेरा नाम उसे जगाए। ओ माधव, ओ मोहन प्यारे, तेरे बिना जीवन अधूरा लगे। मुरली की तान जब कानों में बजे, हर दुःख क्षण भर में दूर लगे। -संभव अग्राल ,नवी
--	--

16. ये वादियाँ

कहाँ खो गई मैं राह में, राह तो मेरी यही है। दूर चली आई मैं शहरों से, रह गई मैं वादियों में। शहरों से दूर हैं ये वादियाँ, भर देती हैं दिल में आबादियाँ। जब भी थक जाती हूँ, आ जाती हूँ इन वादियों में। सुकून भी यही है और शांति भी, जीवन की असली कहानी भी यही है। बलखाती नदी, पहाड़ों के क्रिस्से, हवा का शोर और रात का अँधेरा। ये हसीन वादियाँ, खुला आसमान।	जैसे मानो स्वर्ग उतर आया हो। हर पल यह है ये सुनहरा, मानो हरियाली का डेरा हो। सुबह पक्षियों की चहचहाहट, तितलियों का उड़ना मानो अपनी ओर मुझे खींच रही हो। सूरज की किरणें और सहलाते फूल, गुन - गुन आती मैं। गुनगुनाती वादियों का जादू, मुझ पर छाई प्रकृति की सुंदरता, आँखें तरसाएँ शांति और सुकून — सुबह की वो बातें। -तानया ,नवी
--	--

17. जिंदगी की राह

जिंदगी की राहों में चलते रहो, चाहे आँधियाँ कितनी तेज हों। हर मुश्किल में मुस्कान रखो, कभी हार मानो ना, ये फ़र्ज हो। सपनों को सच्चा कर दिखाना है, हर गिरावट से कुछ सीख जाना है। जो ठोकरें खाकर भी उठता है, वही दुनिया में नाम कमाता है।	दर्द आए तो उसे अपना ना, ग़म को भी हँसकर गले लगाना। जो दिल बड़ा रखे हर पल, वही सच्चा इंसान कहलाना। हर सुबह नया सवेरा लाए, नई उम्मीदों की किरण दिखाए। चलते रहो विश्वास के साथ, मंजिल खुद राहें बतलाए। — धैर्य भाटिया, ग्यारहवीं 'अ'
--	---

18. वो आज भी खड़ी है

किसी किताब का अध्याय नहीं, किसी दंतकथा की कहानी नहीं। वह लौ थी जो अंधेरो को चुनौती दे उठी, “झुक्कूंगी नहीं, ये धरा मेरी है” ऐसा कह उठी। नाज़ुक नहीं, निर्भय थी वह, नारी नहीं — नवयुग की वाणी थी वह। सिर्फ सिंहासन की नहीं, संकल्पों की भी रानी थी वह। विदेशी सत्ता ने फ़रमान सुनाया — “राज्य हमारा, रानी हट जाओ।” रानी मुस्कुराई... “यदि यह भूमि माँ है, तो युद्ध मेरी आरती है। पीछे हटना मेरी प्रार्थना नहीं।” फिर 1857 की रणघोष फूटी — धड़कनों में ढोल बजने लगे, आँखों में चिंगारियाँ उभरने लगीं, और झाँसी की प्राचीर पर एक स्त्री नहीं — संपूर्ण भारत खड़ा था। आखिर हार न मानने का भी उसका प्रण, लड़ती रही जब तक नहीं आया उसका अंतिम क्षण। 18 जून 1858 — शरीर थमा, पर स्वरूप नहीं रुका, इतिहास की उनकी प्रेरणा ने हर युग में नया प्रकाश रचा वही तो देश के लिए वीरता का रक्त बहाने वाली थी, वही तो स्वतंत्रता की	पहली मशाल जलाने वाली थी। उसी ने तो त्यागी उमंगों वाली जवानी थी, वही लक्ष्मीबाई — झाँसी की रानी थी। लेकिन सुनो... इतिहास कहता है — “वो चली गई।” पर हम कहते हैं — “वो रुकी है।” जहाँ किसी लड़की के मन में आत्मसम्मान की चिंगारी जगती है, वहाँ वो खड़ी है। जहाँ कोई माँ अपनी बेटी को डर नहीं — दृढ़ता सिखाती है, वहाँ वो खड़ी है। जहाँ कोई स्त्री अपनी आवाज़ को समझौते में नहीं, सत्य में ढालती है, वहाँ वो खड़ी है। जहाँ - जहाँ नारी अपनी मिट्टी, अपना मान, अपना स्वाभिमान चुनती है — वहाँ - वहाँ वो खड़ी है। क्योंकि झाँसी की रानी कभी गई नहीं। वो हम में, तुम में, हर जागती आँख में, हर उठती साँस में आज भी खड़ी है। -कृतिकाशर्मा, बारहवी (ब)
--	---

19. मेरी अविस्मरणीय यात्रा

- राष्ट्रीयस्तर "एक भारत, श्रेष्ठ भारत"

जीवन में कुछ अनुभव ऐसे होते हैं जो हमें हमेशा याद रहते हैं। मेरे लिए ऐसा ही एक अनुभव था **EBSB (राष्ट्रीय स्तर)** की यात्रा। यह यात्रा न केवल मेरी प्रतिभा का प्रतीक थी, बल्कि जीवन भर साथ रहने वाली यादों से भरी हुई थी। मैंने चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया था। सबसे पहले क्लस्टर स्तर की प्रतियोगिता, जो के. वी. हमीरपुर में हुई थी, उसमें मैंने जीत हासिल की। इसके बाद मैं संभागीय स्तर के लिए के. वी. अंबाला छावनी गई और वहाँ भी विजयी होने के पश्चात मेरा चयन राष्ट्रीय स्तर के लिए हुआ।

राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए हम सभी अंबाला से हैदराबाद के लिए रवाना हुए। हमारे साथ कुल 48 बच्चे और 5 अध्यापक थे, जो अलग-अलग विद्यालयों से आए थे। रास्ते भर यात्रा का माहौल बहुत ही आनंदमय रहा। हमारे साथ एक संगीत शिक्षक भी थे, जिनकी सुरीली आवाज़, हारमोनियम और तबलों की मधुर धुनों ने ट्रेन के अन्य यात्रियों को भी झूमने पर मजबूर कर दिया। दो दिन की यात्रा के बाद हम हैदराबाद पहुँचे।

हैदराबाद में पूरे भारत से आए विद्यार्थी उपस्थित थे। हर दिन नए अनुभव, नई प्रस्तुतियाँ और नई संस्कृतियाँ देखने को मिलती थीं। विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थियों ने अपने-अपने राज्यों की झलक सजावट और कला के माध्यम से बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत की। हालाँकि इस बार मेरी पेंटिंग को कोई स्थान नहीं मिला, परंतु वहाँ मुझे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला, जो मेरे लिए किसी पुरस्कार से कम नहीं था।

कार्यक्रम के बाद हमारी वापसी की यात्रा भी उतनी ही यादगार रही। हमने अंताक्षरी खेली, गीत गाए और हँसी-खुशी के पल बिताए, लेकिन मन में हल्का-सा दर्द भी था कि यह सुंदर सफर अब समाप्त होने वाला है। अंततः जब हम अपने-अपने विद्यालयों — के. वी. नादौन, के. वी. पालमपुर, के. वी. संधोल, के. वी. फरीदाबाद और के. वी. अंबाला — लौटे, तो हम सभी के मन में एक ही बात थी कि इस यात्रा ने हम सभी विद्यार्थियों को यह सिखाया कि----

हार या जीत से बढ़कर अनुभव और सीख ही सबसे बड़ा पुरस्कार होता है।

---साक्षी ग्याहरवी ब

20. अंतरिक्ष की अद्भुत दुनिया

अंतरिक्ष हमारी पृथ्वी से परे एक असीम और रहस्यमय संसार है। यह सितारों, ग्रहों, उपग्रहों, धूमकेतुओं, उल्कापिंडों और आकाशगंगाओं से भरा हुआ है। अंतरिक्ष का कोई अंत नहीं है और इसके रहस्यों को जानने की जिज्ञासा मनुष्य को निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में भारत ने भी उल्लेखनीय प्रगति की है। इसरो (ISRO) ने चंद्रयान और मंगलयान जैसे अभियानों के माध्यम से विश्व में अपनी वैज्ञानिक क्षमता का परिचय दिया है। अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण का अभाव, अत्यधिक ठंड तथा उपग्रहों की सहायता से ब्रह्मांड के रहस्यों को उजागर करने के प्रयास लगातार किए जा रहे हैं। अंतरिक्ष न केवल विज्ञान का विषय है, बल्कि यह मानव की कल्पना और जिज्ञासा की सीमाओं को भी विस्तारित करता है। सचमुच, अंतरिक्ष की यह अद्भुत दुनिया हमारे ज्ञान और खोज की नई दिशाएँ खोलती है।

— धैर्य भाटिया, ग्यारहवीं 'अ'

21. राजभाषा हिन्दी

राष्ट्र की अस्मिता है यह, अस्तित्व न इसका मिटने पाए। आओ हम सब मिलकर इसकी संवृद्धि में कदम बढ़ाएँ।	लेखनी अपनी चलाएँगे। हिन्दी है पहचान हमारी, हम कोकिल बन यही गाएँगे।
कब तक दूसरी भाषा में अपनी पहचान बताएँगे? कब तक दूसरी भाषा में अपनी पहचान बताएँगे?	राजभाषा से राष्ट्रभाषा के पद पर अभिषिक्त कराएँगे। हिन्दी दिवस पर प्रण करके यह हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाएँगे।
हिन्दी है पहचान हमारी, हम कोकिल बन यही गाएँगे।	हिन्दी है पहचान हमारी, हम कोकिल बन यही गाएँगे।
लेख लिखें, अभिलेख लिखें, कहानी, नाटक, उपन्यास लिखेंगे। ज्ञान - विज्ञान की प्रत्येक विधा पर	हिन्दी है पहचान हमारी, हम कोकिल बन यही गाएँगे। द्वारा - आरती प्रसाद ,स्नातकोत्तर हिन्दी शिक्षिका

22. अपना हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश का नाम संस्कृत विद्वान आचार्य दिवाकर दत्त शर्मा ने रखा था। आचार्य दिवाकर दत्त शर्मा राजा दुर्गा सिंह के करीबी थे और राजा ने भी इस नाम को पसंद किया था। बाद में अन्य रियासतों के राजाओं ने भी इस नाम का समर्थन किया, जिसके पश्चात तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार ने इसे स्वीकार कर लिया। हिमाचल शब्द का अर्थ है — “बर्फ की गोद”।

हिमालय की गोद में बसा हिमाचल प्रदेश अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें शिमला, मनाली, कुल्लू और धर्मशाला प्रमुख हिल स्टेशन हैं। इसके अतिरिक्त मसरूर मंदिर और कांगड़ा का किला भी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल हैं। रोमांच के शौकीन लोग बीर-बिलिंग, सोलंग वैली और रोहतांग के पास पैराग्लाइडिंग, ट्रेकिंग जैसी साहसिक गतिविधियों का आनंद ले सकते हैं।

हिमाचल प्रदेश में अनेक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल भी स्थित हैं, जैसे हिडिंबा देवी मंदिर, चामुंडा देवी मंदिर, चिंतपूर्णी देवी मंदिर, नैना देवी मंदिर और ज्वालामुखी देवी मंदिर। ऐतिहासिक और प्राकृतिक आकर्षणों में बीर-बिलिंग, त्रियुंड, करेरी झील, रोहतांग पास और पौंग डैम प्रमुख हैं। इस प्रकार हिमाचल प्रदेश अपनी अनुपम प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिक आस्था और साहसिक पर्यटन के कारण भारत के मानचित्र पर चमकता हुआ एक अनमोल रत्न है।

-सौरभ शर्मा ,नवमी

23. भारत देश

यह भारत देश है मेरा,
विविध संस्कृति और वेशभूषा से ओत-प्रोत।
यह भारत देश है मेरा,
यह भारत देश है मेरा।

इस पर मान है मुझे,
इस पर गर्व है मुझे।
विभिन्न भाषाओं से सुसज्जित है
यह भारत देश है मेरा।

जिसने अपने आपको आत्मनिर्भर बनाया है,

यह भारत देश है मेरा,
यह भारत देश है मेरा।

नीरज चोपड़ा और अवनी जैसे
खिलाड़ियों ने विश्व में
झंडा है लहराया।

यह भारत देश है मेरा,
यह भारत देश है मेरा।

मेड इन इंडिया का नारा दिया है सबको,

विश्व भर के बड़े-बड़े देशों के सामने टेक्नोलॉजी में अपना नाम किया है। यह भारत देश है मेरा, यह भारत देश है मेरा। अपने घर में ही उत्पादित वैक्सीन लगाई और कोरोना से अपनों को बचाया। सुंदर पिचाई और प्राग अग्रवाल जैसे होनहार जवानों की जन्मभूमि है।	विश्व की छोटी तक है पहुँचाया। दिल की गहराइयों से नमन है इसको, यह भारत देश है मेरा, यह भारत देश है मेरा। -सारिका ग्रोवोर(P.R.T)
--	---

24.अपने संस्कारों की शक्ति

संस्कार हमारे जीवन की सबसे बड़ी पूँजी हैं। वे हमें यह सिखाते हैं कि कैसे सही और गलत में अंतर करें, बड़ों का आदर करें और जीवन में विनम्रता बनाए रखें।

अच्छे संस्कार न केवल व्यक्ति को महान बनाते हैं, बल्कि पूरे समाज को उज्ज्वल दिशा में आगे बढ़ाते हैं। संस्कार हमें हमारे परिवार, विद्यालय और समाज से मिलते हैं।

जब हम बड़ों की बातों का सम्मान करते हैं तथा सच्चाई और ईमानदारी का मार्ग अपनाते हैं, तो यही हमारे संस्कारों की असली पहचान होती है।

आज के आधुनिक युग में, जहाँ लोग तेजी से आगे बढ़ना चाहते हैं, वहाँ भी संस्कारों का महत्व कम नहीं हुआ है। संस्कार हमारे व्यक्तित्व की नींव हैं, जो हमें हर परिस्थिति में सही निर्णय लेने की शक्ति देते हैं।

इसलिए हमें अपने संस्कारों पर गर्व करना चाहिए और अगली पीढ़ी को भी इनका महत्व सिखाना चाहिए, क्योंकि संस्कार ही हमारे जीवन की सबसे बड़ी शक्ति हैं।

— सिमरन कौंडल

25. आखिर मैं क्या चाहती हूँ??

हकीकत से परे एक दुनिया में रहना चाहती हूँ।
उसमें खुद के मैं थोड़े जायके में डालना चाहती हूँ।
ये दुनिया थोड़ी कठोर तो है,
पर उस दुनिया में अपने आँसुओं को
बहने देना चाहती हूँ।

जुबाँ पर जो बात सबसे पहले आए,
उसे बिना किसी हथ्र के खयाल के
बस कह देना चाहती हूँ।
अपने तरीके से जीना चाहती हूँ,
जो शायद यहाँ कभी नहीं कर पाती हूँ।

लोगों की रोक - टोक को
बस अनदेखा कर देना चाहती हूँ।
वो अनकही बातें कहना चाहती हूँ,
जो कहने से आज तक कतराती हूँ।

लोगों की बातों का,
उन्हीं के तरीके से जवाब देना
मैं भी चाहती हूँ।

अपनी उलझी चोटी में
लाखों ख्वाबों को पहना देना चाहती हूँ।
कोरे पन्ने पर
स्याही की लकीर खींचना चाहती हूँ।

रूमी के रंग से
अपने ख्वाबों को रंगना चाहती हूँ।
इन सारी चाहतों को
बस एक बार,
बस एक बार
असल हकीकत में होते हुए देखना चाहती हूँ।

लिखना तो
अभी भी मैं बहुत चाहती हूँ,
पर शायद फिर से
अपना रुख बदल जाती है,
और मेरी कलम को भी
जख्म दे जाती है।

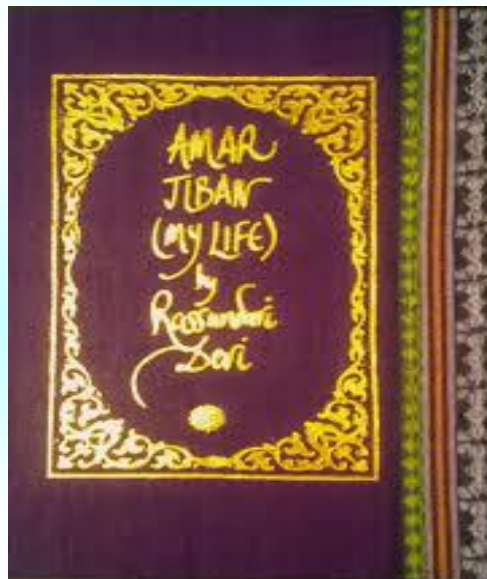
-अंकिता ,बाहरवींब

26. पिंजरे का पंछी, जिसने उड़ना सीख लिया

-----राससुंदरी देवी भारत की पहली महिला आत्मकथा लेखिका -----

राससुंदरी देवी 19वीं सदी की एक प्रमुख बंगाली लेखिका थीं, जिन्हें किसी भारतीय महिला द्वारा लिखी गई पहली ज्ञात आत्मकथा के लिए जाना जाता है। रूढ़िवादी सामाजिक मानदंडों के बावजूद खुद को पढ़ना-लिखना सिखाने का उनका संघर्ष महिला शिक्षा के क्षेत्र में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक कदम था। उनका जीवन यह दिखाता है कि दृढ़ इच्छा शक्ति और आत्मविश्वास के बल पर सामाजिक बाधाओं को भी पार किया जा सकता है। राससुंदरी देवी का जन्म 1809 या 1810 में अविभाजित बंगाल के पोटलिया गाँव में हुआ

था। वे एक धनी ज़मींदार परिवार से थीं, लेकिन बचपन में ही उनके पिता का निधन हो गया। अपने बाल्यकाल में उन्होंने कुछ समय के लिए एक मिशनरी महिला द्वारा चलाए जा रहे स्कूल में लड़कों के साथ पढ़ाई की, जहाँ उन्होंने थोड़ी-सी मराठी सीखी। हालाँकि आगे चलकर सामाजिक परंपराओं के कारण उनकी शिक्षा बाधित हो गई। बारह वर्ष की आयु में उनका विवाह सुमाजित रॉय से हुआ। उस समय समाज में यह मान्यता प्रचलित थी कि यदि कोई महिला पढ़ी-लिखी होती है तो यह उसके पति के लिए दुर्भाग्य का कारण बनती है या वह विधवा हो जाती है। इसी डर के कारण राससुंदरी देवी को खुले रूप में पढ़ने-लिखने की अनुमति नहीं थी। इसके बावजूद उनके मन में ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र इच्छा बनी रही। 59 वर्ष की आयु में, अपने पति की मृत्यु के बाद, राससुंदरी देवी ने अपनी आत्मकथा 'आमार जीबन' लिखी। यह बंगाली भाषा में प्रकाशित होने वाली पहली पूर्ण आत्मकथा थी और किसी भारतीय महिला द्वारा लिखी गई पहली आत्मकथा भी मानी जाती है। इसका पहला भाग 1876 में प्रकाशित हुआ, जिसमें उनके जीवन के संघर्षों और अनुभवों का वर्णन है, जबकि दूसरा भाग 1906 में प्रकाशित हुआ। उनकी आत्मकथा 19वीं सदी के बंगाल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति, असमानताओं और कठिनाइयों का सजीव चित्र प्रस्तुत करती है। यह महिला शिक्षा के महत्व को उजागर करती है और भारतीय साहित्य में महिला लेखकों के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त करती है। राससुंदरी देवी का निधन 1899 में हुआ, लेकिन उनका जीवन और संघर्ष आज भी असंख्य लोगों को प्रेरणा देता है।



-साक्षी , 11वीं ब

27. हिमाचली लोकप्रिय पकवान

सिङ्गू

सिङ्गू हिमाचल का प्रसिद्ध पकवान है। इसे हिमाचल के लोग खाने में बहुत पसंद करते हैं। इसे बनाने में कई सारी पोषक सामग्रियाँ भी उपयोग में लाई जाती है। जैसे सुजी, अखरोट, किशमिश घी आदि का प्रयोग किया जाता है। इसे सर्दियों में बहुत चाव से खाया जाता है। यह खाने में बहुत लाभदायक होता है।

खट्टा

खट्टा हिमाचल का एक प्रसिद्ध खाने की चीज़ है और इसे पेड़ों से उतार कर बनाया जाता है। यह कुछ संतरे की तरह होता है। इसे बनाने में नमक धनिया, पुदिना, मिर्च और शक्कर प्रयोग किया जाता है। खट्टे को काट कर उसमें नमक को मिलाकर खट्टा बन जाता है। और इसे हिमाचल के लोग बड़े चाव से खाते हैं। यह खाने में बहुत स्वादिष्ट होता है। इसे खाने से कई बीमारियाँ भी ठीक हो जाती हैं।

-जाह्नवी, 11वीं

28. हर दिन थोड़ा बेहतर

हर किसी की जिंदगी में अपने आप को बेहतर बनाना बहुत जरूरी है। इसका मतलब सिर्फ पढ़ाई में अच्छा होना नहीं है, बल्कि अपनी आदतों, सोच और व्यवहार को भी सुधारना है। छोटे-छोटे कदम और सकारात्मक सोच हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

गलतियों से डरने की बजाय उनसे सीखना हमें मजबूत बनाता है। जैसे खेल में हारने के बाद महनत करना अगली बार जीत दिला सकता है, वैसे ही पढ़ाई में भी गलतियों से सीखकर हम बेहतर बन सकते हैं।

नई चीज़ें सीखना, समय का सही इस्तेमाल करना और समाज व प्रकृति की जिम्मेदारी निभाना खुद को बेहतर बनाने के तरीके हैं। छोटे प्रयास, जैसे कचरा नहीं फैलाना या दूसरों की मदद करना, भी हमारे सुधार का हिस्सा है। "छोटे कदम भी बड़े बदलाव ला सकते हैं।" हर दिन कुछ नया सीखना और खुद को थोड़ा बेहतर बनाते रहना हमें सफल और खुशहाल इंसान बनाता है।

- काव्य, 11वीं

29. विश्व विजेता डी गुकेश

शतरंज के दिग्गजों का जब भी नाम आता है तो डी गुकेश का नाम आपको जफूफसुनने को मिलेगा। 2024 में विश्व स्तरीय शतरंज क्लासिक एवं बुलेट तथा रैपिड में विजय बनाकर प्रथम स्थान हासिल कर भारत का नाम रोशन कर दिया था। उनके मैच के दौरान जब वह मैग्नस कार्लसन को हराया तब वह विश्व के साथ बार बने वर्ल्ड चैंपियन से जीत का मुकाम हासिल किया। मैच की समाप्ति पर कार्लसन का व्यवहार अत्यधिक शौक एवं रोड था सोशल मीडिया पर भी उनका यह व्यवहार बहुत प्रचलित हुआ था दोनों ही खिलाड़ियों के व्यवहार में एक अनुकूल संकेत देखने को मिला जो खिलाड़ी

विश्व विजेता बना उसकी आंखों से आंसू निकल आए एवं जिस खिलाड़ी को उसने हराया वह एक मुस्कुराहट देकर वहां से चला गया। यह मनुष्य की आंतरिक भागों को प्राप्त करता है जो व्यक्ति जीतने के बाद भी आंसुओं से अपनी भाव प्रकट कर रहा है वह आंसू उसकी खुशी का प्रतीक है तथा जो खिलाड़ी हार गया उसकी वह छोटी सी मुस्कुराहट का भाव उसके अंतर्मन के शोक का भाव से बिल्कुल विपरीत है। इन खिलाड़ियों का अपना-अपना ऐसा भाव पूरी मनुष्य जाति को एक नए भाव से जोड़ने का प्रतीक है।

-कृष्ण कुमार डोगरा ,ग्यारहवीं

30.कबीर के दोहे

मन के हारे हार हैं, मन के जीते जीति।

कहै कबीर हरि पाइए, मन ही की परतीति

=मन के हारने से हार होती है, मन के जीतने से जीत होती है। मन के गहन विश्वास से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है।

साँच बराबरि तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।

जाके हिरदै साँच है ताकै हृदय आप

= सच्चाई के बराबर कोई तपस्या नहीं है, झूठ के बराबर कोई पाप नहीं है। जिसके हृदय में सच्चाई है उसी के हृदय में भगवान निवास करते हैं।

-दमिनी X A

31.हिमाचल रोड ट्रांसपोर्ट कॉरिशन (HRTC)

HRTC का इतिहास 1948 से शुरू होता है जब हिमाचल प्रदेश का गठन हुआ था। शुरुआत में निजी आपरेटरों द्वारा बस सेवाएं चलाई जाती थी लेकिन सरकार ने जुलाई 1949 में यात्री और माल सेवाओं का राष्ट्रीयकरण कर दिया।

1958 मंडी - कुल्लू रोड ट्रांसपोर्ट को-ऑपरेशन की स्थापना पंजाब, हिमाचल और रेलवे सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से की गई थी।

1966 पंजाब के पुनर्गठन के बाद को-ऑपरेशन के संचालन क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के अधीन आ गए।

2 अक्टूबर 1974: हिमाचल सरकार ट्रांसपोर्ट को मंडी - कुल्लू रोड ट्रांसपोर्ट को-ऑपरेशन में विलय कर दिया गया और इसका नाम हिमाचल रोड ट्रांसपोर्ट को-ऑपरेशन (HRTC) रखा गया।

1974: HRTC ने 379 मार्ग पर संचालन किया। 2000-2001 तक यह बढ़कर 733 मार्ग हो गए। आज, HRTC के पास 3,000 से अधिक बसे हैं और 2,500 से अधिक मार्ग और 500 लाख दैनिक संचालन करती है।

HRTC हिमाचल प्रदेश के भीतर और पड़ोसी राज्यों में बस सेवाएं प्रदान करता है।

यह भारत में सभी बस प्रकारों के लिए ऑनलाइन बुकिंग प्रदान करने वाला पहला आरटीसी था।

HRTC ने इलेक्ट्रिक बसें शुरू की हैं और 2030 तक अपनी पूरी फ्लीट को इलेक्ट्रिक में बदलने की योजना है।

32. धाम: हिमाचल की अनोखी भोजन विरासत

हिमाचल प्रदेश में "धाम" एक खास पारंपरिक भोजन परोसने की संस्कृति है जिसे त्योहारों, शादियों और धार्मिक अवसरों पर बनाया जाता है। अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार की धाम मिलती है, और हर धाम का अपना अलग-अलग स्वाद और पहचान होती है। सबसे प्रसिद्ध काँगड़ी धाम है, जो कागड़ा क्षेत्र में बनाई जाती है। राजमा, कंडी, चना, मटर, खट्टा, मीठा और चावल परोसा जाता है। इसके बाद मंडी धाम आती है, जिसे मंडियाली लोग बनाते हैं और इसमें चना, मटर, सेपु बड़ी होती है। चम्बा क्षेत्र की चम्ब्याली धाम भी बहुत प्रसिद्ध है, जिसमें खट्टा, मटर, मटर और चावल शामिल होते हैं। कुछ जगहों पर गद्दी धाम भी परोसी जाती है। जिसमें गद्दी समुदाय पारंपरिक भोजन बनाता है। इन सभी की खासियत यह है कि खाना पत्तल या बड़े पत्तों में नीचे बैठकर परोसा जाता है।

33. कविता - सपने

छोटी सी मैं, सपने बड़े, आसमान को छूने के पड़े।
खेल-खेल में सीखती जाती, हर गलती से सीखती जाती।
पढ़ती रोज़ मन लगाकर, माँ कहती - "मत डरना हारकर।"
शिक्षक जी की बातें सुनती, उनसे ही तो राह चुनती।
कभी बनों में डॉक्टर प्यारी,
कभी लगे पुलिस अधिकारी। कभी लगे मंच पर जाऊँ,
गीत सुनाऊँ, नाच दिखाऊँ।
मुझे पता है,
होगा काम मेहनत से मिलेगा नाम।
छोटी हूँ पर हवाम्मती बड़ी
हर मुश्किल पर रहती खड़ी

-यानवी ,तीसरी

34. हमारे के.वी. नादौन के दिन

के.वी. के आँगन में सपने पले,
हँसी के संग बचपन चले।
हर सुबह नई उम्मीदें लाती,
हर याद ने मुस्कान सजाई।

प्रार्थना की मधुर पुकार,
खेलों के मैदानों से प्यारा।

दोस्ती, मस्ती, छोटे झगड़े सब,
बन गए सुनहरे धागे।

शिक्षकों की वाणी प्यारी,
शिक्षा—जीवन की सीखें सारी।
हर परीक्षा, हर उत्सव में,
सीखा हमने अपने सफ़र में।

अब जब राहें बदल रही हैं,
यादें फिर भी चल रही हैं।
के.वी. नादौन, तेरा नाम रहेगा,
दिल में सदा ये विद्यालय बसेगा।

— अनाया ठाकुर, कक्षा : तीसरी

35. शेरशाह

जब हिमाचल जैसी
देवभूमि में उसने जन्म लिया,
मां के आँचल में मुस्कान थी,
आँखों में प्रण लिया।
नाम मिला विक्रम बत्रा,
करने चला कमाल,
देश की करनी थी सेवा,
बनना था उसकी ढाल।
हर बच्चे जैसा ही था,
पर कहता था — “कुछ कर दिखाना है”,
देश की सेवा करते-करते,
उसी में ही खो जाना है।
मां ने सिखाई ईमानदारी,
पिता ने दिए संस्कार,

शायद यही वजह थी,
कि करता था भारत मां से प्यार।
कॉलेज में भी चमका वो,

कारगिल की ठंडी धरती पर जब उसका कदम पड़ा,
गूंज उठी रणभूमि,
दुश्मन भी शेर की दहाड़ से डर पड़ा।
उसने “ये दिल मांगे मोर”
कहकर तिरंगा लहरा दिया,
उस रणभूमि में दुश्मनों को
एक-एक कर हरा दिया।
सीने पर गोलियाँ खाई,

फिर भी वो पल हँसकर टाल दिया,
उस ठंडी धरती पर उसने,
इतिहास में कमाल किया।

आज भी उस भूमि में तिरंगा लहराता है,
जो भी देखे,
उसे वो रण का दृश्य दिखाता है।
नाम चमकता है उसका करोड़ों में —
शेरशाह, शेरशाह कहलाता था।

NCC का शेर बना, कमा सकता था खूब धन-दौलत, पर देश का सफर चुना। आवाज़ उसकी गूंजती थी, हर दिल में असर दिखता था, क्योंकि अपने जीवन की कहानी, वो खुद ही लिखता था। फिर आया वो पल, जब भारत मां ने पुकारा, उस समय मां को भी बेटे का चाहिए था सहारा।	वो कहता था – “कभी हँस भी लिया करो, जानी,” पर खुद हँसते-हँसते अमर हो गया, बन गया एक कहानी। - दक्ष सरोच , ग्यारहवी 'ब'
--	--

36. मेरे पापा

कहते है खुदा कभी धरती पर न आया है। मैंने तो खुदा को अपने पिता को रूप में पाया है। चाहे जैसी भी घड़ी हो उन्होंने हर दम मेरा साथ निभाया है आखिर बचपन में ऊँगली पकडाकर चलाना जो सिखाया है। कहती हूँ खुद से क्या नसीब मैंने पाया है। शिव शंकर से विचारों को अपने पिता के मन में पाया है। लड़का और लड़की में भेद न सिखाया है। पत्थर से भी मजबूत पापा ने मुझे बनाया है। कलयुग से भी मैंने सतयुग के राम को पाया है।	ना धनुष न टीका संतोष फिर भी उभर आया है। उनका नाम रोशन करना मैंने अपना लक्ष्य बनाया है। उनके विचारों में चलकर मैंने अपना भविष्य संवरता पाया है। अब बस मैंने खुद से किया ये वादा निभाना है। उनके दिए हर सुझाव को अपनाना है। -सुप्रिया कौंडल ,नवमी
--	---

37. संघर्ष की राह

संघर्ष की राह
जीवन छोटा है संघर्ष बड़ा है,
हर मोड़ पर एक झगड़ा खड़ा है,
लड़ते लड़ते थक गई हूं,
खुद से ही अब हार गई हूं।

सपनों की डोर फिसलती जाती,
हिम्मत हर पल सवाल उठाती,
मां की आंखें भर सी जाती,
खामोशी भी कुछ कह ना पाती।

फिर भी जाती राह नजर में,
जैसे उम्मीद जगी हो फिर से घर में,
हो जाती हूं खुश उसे देखकर
जैसे कोई चिराग जल उठा हो अंधेरे में।

थोड़ा रुक कर फिर संभालती हूं,
हर आंसू को ताकत में बदलती हूं,
जीवन चाहे जैसा भी हो,
मैं फिर मुस्कुरा कर चलती हूं।

- मीनाक्षी प्राथमिक शिक्षिका

संस्कृत-हास्य-हंगामा

१. चॉक-आतंक



संस्कृतम्:

शिक्षकः - "एकंनमःलिखितुंचत्वारिचाकानि?!"

छात्रः - "गुरुजी! गणेशःअतिगुरुःअस्ति!"

(हिन्दी: "एक'नमः' केलिएचारचाक?! गणेशजीभारीहैं!")

२. बैग-विस्फोट



संस्कृतम्:

माता - "अत्रककारःकुतः?" (Digging through mess)

बालः - "अम्ब! क-विभक्तिःतुसैंडविच-पत्रेअस्ति!"

(हिन्दी: "यहाँ'क' कहाँहै?"

"माँ! क-विभक्तितोसैंडविचपेपरपरहै!")

३. योग-फेल



संस्कृतम्:

शिक्षकः (Crushed) - "इदंवृक्षासनम्, गुरु-पातनम्अस्ति!"

छात्रः - "क्षम्यताम्! 'पत्थातुः' अपठितः!"

(हिन्दी: "येवृक्षासननहीं, गुरु-गिरानाहै!"

"सॉरी! 'पत्थातु' यादनहींथा!")

४. टिफिन-गुप्तचर



संस्कृतम्:

माता - "ममदधिकुत्रगतः?"

बालिका - "अम्ब! दधि→दाधातुःअभवत्!" (Points to homework)

(हिन्दी: "मेरीदहीकहाँगई?"

"माँ! दही, दाधातुबनगई!")

५. शब्दकोश-तकिया



संस्कृतम्:

पिता - "किमर्थम्कोषःशिरसि?"

पुत्रः (Sleeping) - "ज़zz... निद्रा-समासः... ज़zz"

(हिन्दी: "सिरपरकोषक्यों?")

"ज़zz... नींद-समास... ज़zz")

६. पेपर-उड़न



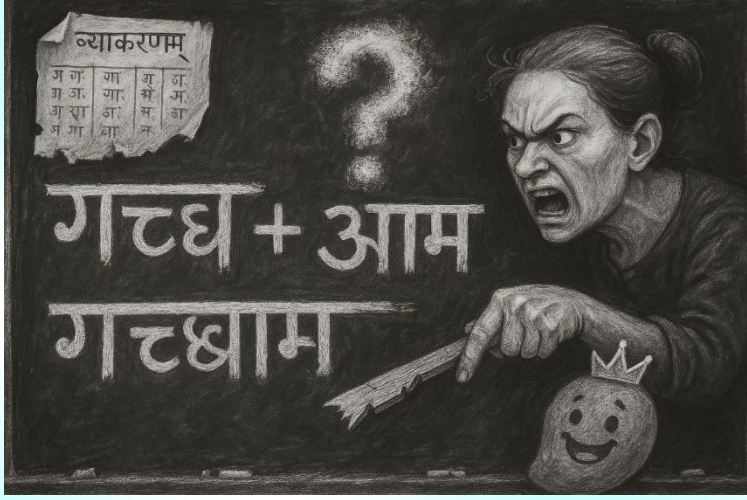
संस्कृतम्:

छात्रः - "पालय! मम'लटलकारः' उड्डयते!"

शिक्षकः - "वत्स! 'गम्धातुः' नउड्डयते!"

(हिन्दी: "पकड़ो! मेरा'लटलकार' उड़रहाहै!""बेटा! 'गम्धातु' नहींउड़तीहै!")

७. श्यामपट्ट-अन्तर्ध



संस्कृतम्:

शिक्षकः - "अत्र आम्रफलम्कुतः आगतम्?"

छात्रः - "गुरुवर! सन्धिः मीठी अस्ति!"

(हिन्दी: "यहाँ आम कहाँ से आ गया?")

"गुरुजी! संधि मीठी है!")

८. फनीफिनिशर



संस्कृतम्:

शिक्षकः - "त्वं हस्धातोः रूपाणिलिख!"

छात्रः - "गुरो! अहम् धाव्धातुम् अधीतवान्!" (Runs away)

(हिन्दी: "'हस्धातु' के रूप लिखो!")

"गुरुजी! मैंने 'धाव्धातु' पढ़ी है!")

❖ ENGLISH

38. School is Cool

School is cool, a place to learn,
With every day, there's a new turn.
Books and pencils, friends to meet,
Learning together—oh, so sweet.
We read and write, we laugh and play,
School is fun in every way.
With teachers kind and friends so true,
Every day, there's something new!

Manvi Thakur
Class VIII

39. Rise Again

When dark clouds hide the morning sky,
And doubts come whispering, cold and sly,
Remember — stars still softly gleam,
Beyond the storm, there lives your dream.
The path may twist, the night may fall,
But courage rises, strong and tall.
A single spark, your heart's own fire,
Can lift you high, can take you higher.
So walk with hope, with faith, with grace,
Let kindness shine upon your face.
For every soul that dares to try
Will find its wings, and learn to fly.

Dhairya Bhatia
Class XI A

40. Never Let Go of Opportunities

Life is full of chances that can change our future—but only if we are brave enough to take them. Opportunities do not always come knocking twice. They are like sunrises; if you wait too long, you might miss them. Sometimes we succeed, and sometimes we stumble, but every failure prepares us for the next big step.

Many people wait for the “perfect moment,” but the truth is, no moment is ever perfect. The right time is now, and the right person is you. Even if the path is uncertain, step forward with courage. Every stumble teaches, every try strengthens, and every leap builds a story worth telling.

So when life knocks softly at your door, open it wide. Welcome the unknown with a smile.

Never let go of opportunities—they are the stars that guide us toward our destiny!

Aashi
Class IX

41. A BEAUTIFUL DAY

The sun is shining, bright and warm,
It lights up the sky with every charm.
The birds are singing — oh, what a sound!
It's a beautiful day all around.
The flowers are blooming, colours so fine,
The gentle breeze feels soft and kind.
Let's enjoy this day, whatever may come
Truly, it's a beautiful day.

Mridul
Class VII

42 .LESSONS FROM LIFE

Life is the best teacher we have. It doesn't give us books or exams, but it teaches us through experiences. Every failure, every mistake, and every challenge shows us something new about ourselves.

Sometimes, things don't go as we plan. We fall, we cry, we struggle, but these moments make us stronger and wiser. Success becomes more meaningful only after facing difficulties.

Life teaches us to be patient, to stay kind, and to never stop trying. No matter how hard the journey seems, every step we take brings us closer to our dreams.

So, let's keep learning from life—not just from textbooks, but from the little things around us: a smile, a helping hand, a sunrise, or even a mistake.

Because in the end, life itself is the greatest classroom.

Shard Kumar

Class XI B

43. IN EVERY DROP LIES AN OCEAN

Only an ocean gets filled drop by drop. To create any work you're proud of, you must put in the little efforts—consistently, over time. After a while, those small steps grow into great achievements.

Don't look down on your small and seemingly insignificant beginnings. It's only a matter of time before success comes. Never despise a small start. Take the right risks, and don't quit even when situations make you feel like giving up. Your tenacity will speak loudly and be rewarded.

Times may be difficult because of the environment, but should one fold their hands and stay hungry? No. Business may not work for everyone, but it definitely works for some. Find what works for you. Some people are good at one thing and poor at another, while others are the opposite.

Know your environment. Carry out a survey. Understand your strengths, weaknesses, opportunities, and threats. How well you rise after a fall determines how soon you will reach success again.

Start small but stay consistent. Most wealthy people you see today started small—with dedication. They kept adding little drops of effort and saving, and eventually built their own mighty ocean.

You don't need to be perfect—just consistent.

Ruhani

Class IX

44. Oh Bharat, The Land I Adore

Oh Bharat, land of the free,

Where culture and heritage blend with glee.

From the Himalayas to the southern shore,

You are the land I truly adore.

Your rivers, your mountains, your fields so green,

Your people's hearts—pure and serene.
Your festivals, a colorful sight,
Your traditions, a guiding light.
You are the land of Mahatma Gandhi's strides,
Where non-violence and truth abide.
You are the land of Tagore's poetic might,
Where creativity and wisdom take flight.
Oh Swadeshi Bharat, my heart beats for you,
With every fibre, loyal and true.
Bound to your progress, I see a brighter day—
A nation where every Indian can live in a better way.
So let us strive for a future bright,
With unity, integrity, and love so pure and right.
For a Swadeshi Bharat, we'll work with all our might,
And make our nation shine with everlasting light.
Pranjil Sharma
Class XII B

45. THE QUIET HOUR

In the hush before the morning light,
When shadows linger, soft and slight,
The world exhales a gentle sigh,
As dreams drift slowly from the sky.
A tender glow begins to bloom,
Chasing night's remaining gloom.
And in that quiet hour, I find
A little peace within my mind.
Ishika
Class XI A

46. The Failure File: Why Falling Short Is Your Best Teacher

The Unspoken Truth About Failures That School Doesn't Teach
In school, we are constantly measured by what we get right—the perfect score, the winning goal, the flawless performance. The pressure to succeed is intense, and the fear of failing often feels paralyzing.
We learn to avoid mistakes, hide our missteps, and sometimes, simply not try at all if the chance of getting it wrong seems too high.
But what if this focus on perfect results is actually the biggest barrier to true, long-term achievement?

The greatest innovators, artists and leaders throughout history didn't succeed despite their failures—

they succeeded because they embraced them.

It's time we pull failure out of the shadows and see it for what it truly is: a teacher.

Failure Is Not an Identity, It's an Action

We often make the mistake of internalizing a setback.

When a project doesn't work out, we think, "I am a failure."

This is devastating and completely untrue.

Instead, we need to shift our language.

A better statement is:

"The strategy I used did not produce the desired outcome."

This mindset separates you from the action, allowing space to learn, adapt, and grow.

Viraj

Class XI A

47. Driven to the Finish

"Driven to the Finish" means never stopping halfway, no matter how many obstacles you face. "उत्तिष्ठतजाग्रतप्राप्यवराप्तिबोधत"—a famous quote from the Bhagavad Gita—teaches us to arise, awake, and stop not till the goal is reached. This attitude toward hard work can help you achieve the things that once felt impossible.

Success comes to those who keep moving forward even when the path is tough. The duty of every human is simple: work continuously without giving up.

Along your journey, you will face many failures, but remember—winners are not those who never fall, but those who never quit.

Many times, you may feel your progress is slow, almost invisible. But even small steps lead you to the end of the race. It is not the rabbit who wins, but the turtle who keeps moving steadily without stopping. Every small effort adds up and becomes a big achievement.

In the Mahabharata, Lord Shri Krishna instructs Arjuna to work hard without fear and without worrying about the results. A practical example can be seen in learning to ride a bicycle—you may fall many times, but you try again and again until you ride perfectly.

Hard work, consistency, and discipline are the engines that push a person toward their goals. Success may take time, but with constant effort, it always arrives.

REMEMBER:

If you stop now, you may never get the chance to chase your goals again!

Asmita

Class XI A

48. Stressed? Try a Little Positivity

Let's be honest—sometimes school feels like a battlefield.

In the morning, I might forget my ID card, or I realize that I studied nothing for a test.

Then there are moments when a teacher suddenly says, “I need that assignment right now,” and I’ve either forgotten to bring it... or I haven’t completed it at all (whoops!). Yes, school can be stressful.

But one thing that helps me deal with it is staying positive.

Of course, being positive doesn’t mean ignoring your problems or pretending everything is perfect. It means facing challenges with courage.

Instead of saying, “I can’t do this,” say, “I’ll try.”

This small change can make a big difference.

School also becomes easier when everyone supports each other—when a student helps another, when a teacher encourages us, when our friends cheer us up after a bad test instead of criticizing us. These small moments really change the atmosphere. Suddenly, school feels less like a burden and more like home.

In the end, I would say that positivity helps us enjoy the journey, handle pressure better, and stop worrying only about the results.

Kavya

Class XI A

49. The Value of Time

Once upon a time, there was a young boy named Sam. He loved to play all day and didn’t like doing his chores. One day, Sam saw an old man planting seeds in his garden. Curious, Sam asked, “Why are you working so hard?”

The old man smiled and replied, “Time is like a river—it flows away and never comes back. Every moment you waste is like a seed that never grows.”

Sam thought about it and realized he was wasting precious time that would never return. He understood that he needed to change. So, he started using his time wisely.

Many years later, Sam became successful and happy. He was always grateful for the lesson he learned. He understood that time, once lost, can never be regained, and that each moment is a gift to be cherished.

MORAL: Time is precious. Use it wisely.

Damini

Class XI A

50. A Bond

A bond is a special and priceless relationship shared between individuals. It can be formed through care, understanding, and trust. A strong bond grows beautifully when people support each other and stand together in times of joy as well as difficulty.

These connections shape us from childhood to adulthood, guiding us and helping us become better human beings. In conclusion, bonds are precious gifts formed among people, and they can be useful in teaching us the true meaning of love, care, and togetherness.

If you want it to be more emotional, more formal, or shorter, just tell me!

Priyanshi

Class XI A

51. Finding Creativity in Every Day Moment

Creativity is often seen as something grand — a famous painting, a powerful invention, or a perfect performance. But in truth, creativity hides in the smallest corners of our daily lives. It lives in the way we think, notice, imagine, and shape the world around us. And some of the richest creative moments happen right in school.

Walking through the quiet corridor, listening to the morning announcements, or watching sunlight fall across your desk — each of these ordinary moments carries tiny sparks of inspiration. Creativity doesn't always shout; sometimes it simply whispers.

We often think creative work and studies are separate. But learning becomes meaningful when creativity steps in.

In Maths, finding a new method to solve a problem shows creative thinking.

In Science, every experiment encourages curiosity — observing change, asking questions, trying again, even when something fails.

In English, stories, poems, and essays are shaped from the world inside your mind.

In Social Science, creativity helps you connect people, places, and events in thoughtful ways.

We don't need miracles or big moments to feel creative. Sometimes it arises from the simplest things.

Mistakes are often seen as failures, but creativity grows from opportunity. A creative mind is one that explores, discovers, and tries again. Creativity becomes stronger when we allow ourselves to think differently. It isn't something far away — it doesn't need special talent. It only needs your thoughts, your expression, and your everyday choices.

Ridhima
Class XI A

52. The Happiest Days of Your Life

School days should be a happy time in a young person's life. What, then, can make people's lives miserable during this time? In my opinion, there is one word that answers this question—bullying.

Unfortunately, bullying is quite common in the schools where I live. It can affect students of any age, and both boys and girls. A friend of mine had a very negative experience at school last year, as an older boy continually called him names and sometimes even posted nasty messages about him on Facebook. Obviously, my friend felt very upset about this and it affected his self-confidence. Some days, he didn't want to come to school at all.

What can people do to stop this problem? Personally, I think teachers need to be aware that bullying may be happening in their classes and must be very strict whenever they identify a case of bullying. Another thing teachers could do is prepare lessons to talk about the problem and support the victims. As for students, if they find out that a classmate is being bullied, they should support them as much as possible and inform a teacher.

Bullying can be a nightmare, but there are things we can do to prevent it. Hopefully, one day all students will be able to go to school without fear of being bullied.

Yannis
Class VIII

53. The Mountain

If the mountain seems too big today,
then climb a hill instead.

If the morning brings you sadness,
it's okay to stay in bed.

If the day ahead feels heavy
and your plans feel like a curse,
there's no shame in rearranging—
don't make yourself feel worse.

If a shower stings like needles
and a bath feels like you'll drown,
if you haven't washed your hair for days,
don't throw away your crown.

A day is not defeat;
don't think of it as failure—
just a quiet, kind retreat.
It's okay to take a moment
from an anxious, fractured mind;
the world will not stop turning
while you get realigned.
The mountain will still be there
when you want to try again;
you can climb it in your own time—
just love yourself till then.
Yannis
Class VIII

54. Mother

A gentle hand, a loving face,
The heart of home, our special place.
She works so hard, her love so deep,
Secrets and promises she helps us keep.
Through sun and rain, through joy and pain,
My guiding star, again and again.
Easing our troubles, soothing our fears,
For all she does, so good and dear.
Mother, dear mother, I love you true,
For all my days, I'll cherish you.
Through all my life, in every stage,
She writes the best on every page.
A comfort true, a constant friend,
On her support, I can depend.
For gentle smiles and quiet grace,
She makes the world a better place.
A guiding light, in every way,
My love for her grows every day.
Tanvi
Class VIII

55. A World Without Technology

Have you ever imagined life without technology? It might actually be peaceful. Without gadgets and screens, people could spend more time talking,

playing outside, and enjoying nature. Families could sit together without phones, and students could focus better without distractions. Life would be slower but calmer. The environment might also improve because there would be less pollution from factories and machines. A world without technology may be difficult, but it would surely be more natural and peaceful.
Akriti SandaalClass VIII

56. Silence

Silence is not empty air,
It's a place where thoughts repair.
Listen—noise around begins to fade,
Silence speaks in its own shade.
It's the pause between two words,
The secret language of the birds,
The gentle calm of early dawn,
The quiet breath before we yawn.
Silence heals the tired mind,
Shows answers we can't always find.
It holds our fears, our hidden cries,
And reflects truth like clear blue skies.
Not every silence means we're weak—
Sometimes it's strength that doesn't speak.
For in the rush, we learn to see
Who we are, and who we can be.
Silence soft, silence deep,
A friend we meet before we sleep.
A peaceful touch, a gentle art—
The calm that lives inside the heart.
Srishti Bhatia
Class VIII

57. Misuse and Proper Use of Mobile Phones

Mobile phones are one of the most important inventions of modern times. They help us stay connected with family and friends, get information, and even study online. However, like every invention, mobile phones have both good and bad sides.

Proper Use

When used wisely, mobile phones can be very helpful.

Students can learn through educational apps, watch study videos, and read e-books.

They can also use mobile phones to contact their parents in emergencies and to stay updated with news and information.

Overall, mobile phones make life easier, faster, and more convenient.

Misuse

Unfortunately, many people misuse mobile phones.

Some students spend too much time playing games, watching unnecessary videos, or scrolling through social media.

This can harm their studies and affect their health.

Excessive use of mobile phones can make people lazy and addicted.

Conclusion

Mobile phones are like a double-edged sword. They can be our best friend or our worst enemy, depending on how we use them.

We should use mobile phones only for good purposes—such as learning, communication, and safety—and avoid wasting time on unnecessary activities.

Using mobile phones wisely can make our lives better and brighter.

Arush Sharma

Class VIII

58. My Happy School

I love my school, KV Nadaun,

It brightens days from morning to noon!

With friends so kind and hearts so true,

Each day brings something fresh and new!

We laugh and play, we jump around,

With joy and cheer, the halls resound!

Our teachers guide with smiles so bright,

At KV Nadaun, everything feels right!

Somya Grover

Class V

59. Life's Dream

Life is a journey—

a path unknown, waiting for us to create.

Every step brings a challenge,

but courage is what helps us move ahead.

Life is a dream

that we must strive to make real—

every moment inviting us to live fully,
to feel the joy, to truly feel.
Life is a test
that we must learn to face with ease—
each obstacle a chance to rise,
to overcome, and to succeed.
Life is an opportunity
we must never let slip away—
every day a call to try something new,
to find a moment of bliss.
Life is a work of art
shaped by our own hands—
every colour we choose to add
becoming the beauty we share with the world.
By Ishita Sharma
Class V

60. The Buried Talent – A True Story

Every person is born with a special gift — a talent that makes them unique. Some discover it early, while others spend years searching for it. But sometimes, life's experiences, expectations, and fears bury that talent deep inside us. It doesn't disappear; it just waits — quietly — for the right moment to shine again.

I was one of them.

Since childhood, I was deeply connected to art and drawing. I was never the topper of my class — not because I didn't study, but because my heart always belonged to creativity. While others were busy memorizing chapters, I was busy imagining worlds.

I could draw cartoon characters with perfect expressions, sketch imaginary places, and bring ideas to life with my pencil.

One of my favorite drawings from childhood is still fresh in my memory. It was a dark night scene of a town where UFOs were landing and aliens were stepping out. A huge banyan tree stood at the center with a mysterious tunnel beneath it — cars were driving into that tunnel and disappearing inside. It was something no one had ever seen or imagined before — purely born from my creativity.

Sadly, I lost that drawing when I was very young. At that time, I didn't realize I had also lost a piece of my imagination.

As I grew older, things changed. The pressure of studies increased, and my marks never matched people's expectations. Slowly, I started feeling that

maybe being “good at drawing” wasn’t enough. Balancing studies and creativity became impossible. And unknowingly, I began ignoring the one thing that made me happiest.

Days passed. My sketchbooks stayed closed. My colours dried up. And without noticing, I had buried my own talent.

Years later, one day, someone said to me, “In life, do what you’re best at.”

That simple line hit me so hard that I couldn’t stop thinking about it.

For days, the question kept repeating in my head —

“What am I truly best at?”

So, one Sunday, I decided to find the answer. I sat alone for hours, thinking about my life, my interests, and the things that made me happy. Then, while cleaning some old dusty boxes that were kept aside to sell, I found something that completely changed me.

Hidden between those old papers was one of my childhood drawings. It wasn’t the UFO one — that one was lost forever — but this was another artwork I had made with the same passion. In that drawing, a person was standing on the edge of a mountain, watching the sun slowly set into the ocean.

The moment I saw it, something inside me moved. That person in the drawing felt like me — standing silently at the edge of dreams, watching them fade away like that sunset.

I didn’t cry, but I felt a deep sadness — the kind you can’t express in words.

That small piece of paper wasn’t just a drawing; it was a message. It reminded me that my talent was never gone — it had only been buried under the pressure of life.

That day, I made a promise to myself —

I will never let my talent die again.

Even if life gets tough, even if people don’t understand, I’ll keep drawing.

Because art isn’t just my hobby — it’s a part of who I am.

Buried talents are like seeds hidden under the soil.

They just wait for the right time to bloom again.

And maybe, one day, when someone looks back at their forgotten dreams, they too will rediscover their buried talent — and bring it back to life.

Harshit Kaushal

Class 12-B

61. Moon, Earth, and the Sun

Ancient Indian astronomers, including Aryabhata, had observed the apparent motion of celestial objects such as the Sun, Moon, planets, and stars.

Aryabhata, a famous mathematician and astronomer of ancient India, wrote an important treatise called the Aryabhatiya around the 5th century CE.

In the Golapada section of the Aryabhatiya (Verse 9), Aryabhata explained the apparent motion of the sky as being due to the rotation of the Earth.

The Sun rises in the east around 21 March (the equinox) and remains visible for six months at the North Pole, where the Sun does not set until 23 September. The South Pole experiences the opposite behavior. Thus, the polar regions experience six months of continuous daylight followed by six months of darkness.

This happens because the Earth's axis of rotation is tilted with respect to its orbit around the Sun.

Sonakshi Choudhary

Class VII

62. Sunflower — Cherished by Night

Am I merely a flower
in someone's garden?
Good enough to be planted,
but never bright enough to be cherished?
Isn't the sunflower, too, afraid—
bright in the day, sorrowful at night?
Then why are only my downs counted?
They assume they know me—
my beginning, my bloom—
though my ending is yet to be deciphered.
Maybe being known isn't a virtue,
but mystery is.
Those stars above advise,
when the night calls,
their light cannot be held.
Closing a door
doesn't stop us
from finding a window beneath.
Someone's hindrance
can't shatter
my furious dreams.

Ankita Thakur

Class XII B

63. Riddles

1. What comes once in a minute, twice in a moment, but never in a thousand years?

Answer: Letter M

2. Nobody empties me, but I never stay full for long. What am I?

Answer: The Moon

3. Can you guess what is at the end of a rainbow?

Answer: W

4. Which is the biggest English alphabet that contains the most water in it?

Answer: C

5. Who has married many women but never married?

Answer: A priest

6. What kind of ship has tons of mates but no captain?

Answer: Relationship

7. What loses its head in the morning but gets it back at night?

Answer: A pillow

8. What kind of tree can you carry in your hand?

Answer: Palm

9. Poor people have it. Rich people need it. If you eat it, you'll die. What is it?

Answer: Nothing

10. You'll find this in Mercury, Earth, Mars, Jupiter and Saturn — but never in Neptune or Venus. What is it?

Answer: R

Raaida

Class XI B

64. The Secret of Success

Everyone wants to know the secret of success, but very few truly understand what it takes to achieve it. Success does not come overnight — it is earned through hard work, determination, and never giving up, no matter how many times you fail.

Failures are not the end; they are lessons that teach us how to improve. A successful person always learns from mistakes and keeps moving forward. Along with hard work, self-discipline and a positive attitude play a major role in reaching our goals.

Time management, confidence, and consistency are the keys that open the door to success. We should always stay focused on our dreams, believe in ourselves, and keep moving ahead.

Remember, success is not just about winning — it is about becoming better each day.

So keep working hard, stay positive, and never lose hope — because the secret of success lies within you.

SAVETA KAUNDAL

Class VIII

65. The True Meaning of Love

What people usually think love means and what it truly is are often very different. Love is one of the purest emotions we can ever feel. Many believe love only means being in a relationship, but the truth is that it's not limited to one person—it lives in every small act of care, warmth, and connection that touches our hearts.

We feel love when our parents wait for us at the dinner table, when our friends make us laugh after a long day, or when someone listens to us, helps us, or simply stays beside us in silence. It's even present in nature—the way flowers bloom for sunlight, or how the sky hugs the earth with rain.

Love teaches us kindness, patience, and gratitude. It reminds us that happiness grows when we give, not just when we receive. True love is not about perfection—it's about feeling valued, understood, and connected to people, to life, and to ourselves.

So, if you ever feel lonely, remember: love is never far away. It's all around you, in the simple moments of life.

Pari Choudhary,

Class XI-B

66. Our Last Year

This is the year I'll never forget,
The best of all we've ever met.
Laughter, talks, and fun all day —
Now slowly, they'll fade away.
We click our pictures, capture all memories,
Hardly hiding the tears we feel inside.
Last assemblies, last school bell, last punishment,
Moments that will forever stay alive.
We'll miss the jokes, the fun, the fights,
The memories made will always shine bright.
Even when we go our own way,
Their warmth will never fade away.

So here's to school — our second home,
Where joy and friendship freely roam.
At times we fought, our moods would fall,
Yet school remained the best of all.
This last year taught us to see,
How special every moment can be.

Liza,
Class 12 B

67. Amazing Facts

"I am." is the shortest complete sentence in English.
The word "set" has the most meanings in the English language.
The most commonly used noun in English is "time."
The longest word in English has 189,819 letters.
William Shakespeare, the famous English playwright and poet, invented over 1,700 English words, including "lonely," "bedroom," and "gossip."
A day on Venus (one full rotation) is longer than a year on Venus (one orbit around the Sun).
A snail can sleep for up to 3 years.
Kavya
Class XII B

68. Future Demands, Yesterday Scars

They say, "Focus on the present,
don't let your past faze you."
But how do I let them know—
that scars take time to heal,
and sometimes, they never do?
The fear inside my mind
doesn't let me trust anyone anymore.
It claws at the back of my mind
and even the mere memory of it
shakes me to the core.
Panic surges through my fingers,
adrenaline rushing through my veins,
my heart pounding in its ribcage.
Anxiety chokes my breath,
a rising lump in my throat
too hard to swallow.

They say, "Focus on the present,"
and I ask them—
How?

JAINIKA SHARMA
CLASS XII B

69. SUCCESS

Life is tough for everyone
For some it's even tougher
However rough you think it is
Don't think it can't get rougher....

But take a tip from one who knows
Your life you can enhance
But you will get no guarantee from me
Should you leave it all to chance.

If a bitter life is what you seek,
You have to make it happen
decide on what you really want
And pursue success with passion.

It doesn't matter where you are
Because you are not a tree
With hard work and persistence
Go where you want to be...

You have the power to change your life. Success you can pursue
With grit and determination
And the talent nature gave you...
Vaidehi Kango
Class IX

70. Lessons Beyond Books

One morning I missed my bus again,
Running with shoes wet in the rain.
Ma'am shouted, "Next time, wake up fast!"
I laughed — but that warning didn't last.
At school, my homework wasn't done,

Sir asked, "Excuse?" — I had none!
I said, "The dog ate half of it..."
He smiled, "Nice try, now don't repeat."
At lunch break, my tiffin fell down,
My sandwich wore a dusty crown!
Friends came running, some teased in fun,
We shared our lunch — hunger was gone.
Once I failed in math so bad,
I thought my parents would go mad.
But Dad just smiled and said, "You see,
Failures too can set you free."
I learned that marks don't make your name,
But faith, kindness, and honest game.
Books teach facts — but life does more,
It opens heart and mind's own door.
So here's to school — our second home,
Where dreams take shape, where friendships bloom.
Where we learn to fall, and rise again,
And turn our losses into gain.
Angel Sharma
Class XI B

71. Between Pines and Mist

Mist drifts between Shimla's hills,
a hush spreads through the pines.
The air tastes of cedar and rain—
fresh as a thought just born.
Morning breaks without hurry,
shadows melt on winding roads,
where whispers of the forest
mingle with the chill of light.
A brook hums low beneath the bridge,
its music weaving through the moss.
Somewhere, a bell rings—faint, distant, timeless.
The wind carries voices of leaves,
echoes of laughter,
the rhythm of footsteps on stone.
Shimla breathes softly,
half in dream, half awake.
Evening stretches its quiet hands,

coloring Shimla's roofs in gold.
Smoke curls upward—slow and sure,
as stars bloom one by one.
And still, the mountains hold it all—
the peace, the hush, the knowing—
as if they have always
been waiting for someone to look up
and simply feel Shimla.
By Aarnav Verma
Class 9th

72. The Beauty of Simplicity

In today's world, everyone is running after money and fame, forgetting that true luxury and happiness often lie in simple things. Simplicity means living life without unnecessary worries, being honest, and finding joy in the little moments.

A simple life helps us stay peaceful. For example, a walk in the park, a cup of tea with family, or watching the sunset can make us feel calm and content. Small things often give us more satisfaction than expensive gifts or grand parties.

Many great people, like Mahatma Gandhi, lived a simple life. He showed the world that one can be powerful and respected without wearing rich clothes or living in big houses. His simplicity became his strength.

Even in nature, beauty lies in simplicity — a flower blooming, birds singing, or rain falling. They don't try to impress anyone, yet they make the world beautiful.

In short, simplicity is not about having less; it's about finding more meaning in what we have. When we live simply, our hearts become lighter and our lives more beautiful.

Shivangi Class XI B

73. The Era of Online Classes

The COVID-19 pandemic brought an unexpected pause to our normal lives. Schools were closed, playgrounds were empty, and suddenly our classrooms moved to our screens. Thus began the era of online classes.

At first, it felt exciting to study from home, attend classes in pyjamas, and chat with friends virtually. But the joy of sitting with friends, the laughter in the corridors, and the warmth of teachers' smiles were replaced by muted microphones and unstable internet connections.

Yet this era taught us something valuable — adaptability. We learned to adjust, to use technology smartly, and to continue learning despite challenges. Online classes were not just about education; they were about resilience. They showed us that learning never stops, no matter what the circumstances are. Truly, the era of online classes will always be remembered as a unique chapter in every student's life — one that changed the meaning of education forever.
– Sakshi, Class 11 B

74. Riddles

1. I speak without a mouth and hear without ears. I have no body but I come alive with wind. What am I?

Answer-- echo.

2. The more of this there is, the less you see. What is it?

Answer-- darkness.

3. I'm tall when I'm young, and short when I'm old. What am I?

Answer-- a candle.

4. I have cities, but no houses, forests, but no trees, and rivers, but not water. Who am I?

Answer-- a map.

5. What has keys, but open locks?

Answer-- a piano or a keyboard.

6. I fly without wings. I cry without eyes. Wherever I go, darkness follows me. What am I?

Answer-- a cloud.

7. What can travel around the world while staying in a corner?

Answer-- a stamp.

8. I'm taken from mine and shut up in a wooden case, from which I'm never released, and yet I'm used by almost every person. What am I?

Answer-- pencil -lead (graphite)

9. What gets wetter the more it dries?

Answer-- a towel.

10. What has a head and a tail and has no legs?

Answer-- a coin.

11. The more you take, the more you leave behind. What are they?

Answer-- footsteps.

12. I have one eye, but I can't see. What am I?

Answer-- a needle.

13. I run, but never walk. I have mouth, but never talk. I have bed, but never sleep. What am I?

Answer-- a river.

14. What invention lets you see straight through walls?

Answer-- a window..

Daksh Saroch

Class XI B

75. Artificial Intelligence (AI)- A Boon or A Bane

Artificial Intelligence (AI) is one of the most impactful technologies of the modern world, and it can be seen as both a boon and a bane. On the positive side, AI improves efficiency, supports healthcare, enhances education, and makes daily life easier through smart devices and intelligent systems. It helps businesses grow, assists in scientific research, and even predicts natural disasters, making the world safer. However, AI also brings several challenges. It can lead to job loss as machines replace human workers, reduce meaningful human interactions, and create privacy concerns due to large-scale data collection. Moreover, misuse of AI in the form of cyber-attacks, deepfakes, and biased decision-making can pose serious risks. Therefore, AI is neither wholly good nor bad; its impact depends on how responsibly humans use and control it. If used wisely, it can be a powerful tool for progress, but if misused, it can become harmful.

Jigmed Norbu Upasak

Class IX